Dr. P. K. Singh. Guest Teacher.
Core - III / General Sem - II

प्रश्न - हीनयान और महायान का क्या अभिप्राय है।

हीनयान और महायान बौद्ध धर्म के दो सम्प्रदाय है धर्म को अनुकूल बनाने के लिए कनिष्क ने कश्मीर के कुण्डलवन नामक स्थान में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया था। यहां पर महायान शाखा का उदय हुआ। बौद्ध धर्म के प्राचीन शाखा को हीनयान नाम दिया गया। इन दोनो में निम्नलिखित अन्तर है।

हीनयान शाखा	महायान शाखा
1- इस शाखा के अनुयायी देवताओं में विश्वास नहीं रखते हैं।	1- इस शाखा के अनुयायी बुद्ध को देवता मानते हैं।
2- इसमें मूर्ति पूजा का कोई स्थान नहीं है।	2- इसमें बुद्ध की मूर्ति की पूजा होती है।
3- इस शाखा के अनुयायी अष्ट मार्ग को सच्चा मार्ग मानते हैं।	3- इस शाखा के अनुयायी पूजा पाठ को स्थान देते हैं
4- इसका अन्तिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना होता है।	4- इसका अन्तिम लक्ष्य स्वर्ग की प्राप्ति है।
5- इस शाखा ने प्रचार के लिए पाली भाषा का प्रयोग किया	5- इस शाखा ने प्रचार के लिए संस्कृत भाषा का प्रयोग किया
6- इस शाखा के धर्म के सिद्धान्त हिन्दू धर्म के सिद्धान्त से अधिक मेल नहीं खाते होता।	6- इस धर्म के सिद्धान्तो एवं हिन्दू धर्म के सिद्धान्तो में काफी समानता है।